वराहमुखीस्तवः तथा वाराह्यनुग्रहाष्टकम्

{॥ वराहमुखीस्तवः तथा वाराह्यनुग्रहाष्टकम् ॥} कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला हलमुसलिनी सद्भक्तेभ्यो वराभयदायिनी । कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोरघनस्तनी जयति जगतां मातः सा ते वराहमुखी तनुः ॥ १ ॥

तरित विपदो घोरा दूरात् परिह्रियते भय-स्खलितमितभूतप्रेतैः स्वयं व्रियते श्रिया । क्षपयित रिपूनीष्टे वाचां रणे लभते जयं वशयित जगत् सर्वं वाराहि यस्त्विय भक्तिमान् ॥ २ ॥

स्तिमितगतयः सीदद्वाचः परिच्युतहेतयः क्षुभितहृदयाः सद्यो नश्यदृशो गलितौजसः । भयपरवशा भग्नोत्साहाः पराहतपौरुषा भगवति पुरस्त्वद्भक्तानां भवन्ति विरोधिनः ॥ ३॥

किसलयमृदुर्हस्तः क्लिश्यते कन्दुकलीलया भगवति महाभारः क्रीडासरोरुहमेव ते । तदिप मुसलं धत्से हस्ते हलं समयद्रुहां हरसि च तदाघातैः प्राणानहो तव साहसम् ॥ ४॥ जननि नियतस्थाने त्वद्वामदक्षिणपार्श्वयो-र्मृदुभुजलतामन्दोत्क्षेपप्रणर्तितचामरे । सततमुदिते गुह्याचारद्रुहां रुधिरासवै-रुपशमयतां शत्रून् सर्वानुभे मम देवते ॥ ५ ॥

हरतु दुरितं क्षेत्राधीशः स्वशासनविद्विषां रुधिरमदिरामत्तः प्राणोपहारबलिप्रियः । अविरतचटत्कुर्वद्दंष्ट्रास्थिकोटिरटन्मुको भगवति स ते चण्डोच्चण्डः सदा पुरतः स्थितः ॥ ६ ॥

क्षुभितमकरैर्वीचीहस्तोपरुद्धपरस्परै-श्चतुरदधिभिः क्रान्ता कल्पान्तदुर्ललितोदकैः। जननि कथमुत्तिष्ठेत् पातालसद्मबिलादिला तव तु कुटिले दंष्ट्राकोटी न चेदवलम्बनम्॥७॥

तमसि बहुले शून्याटव्यां पिशाचिनशाचर-प्रमथकलहे चोरव्याघ्रोरगद्विपसंकटे । क्षुभितमनसः क्षुद्रस्यैकाकिनोऽपि कुतो भयं सकृदिप मुखे मातस्त्वन्नाम संनिहितं यदि ॥ ८॥

विदितविभवं हृद्यैः पद्मैर्वराहमुखीस्तवं सकलफलदं पूर्णं मन्त्राक्षरैरिममेव यः। पठति स पटुः प्राप्नोत्यायुश्चिरं कवितां प्रियां स्तस्खधनारोग्यं कीर्तिं श्रियं जयमूर्वराम् ॥ ९ ॥

इति श्रीवराहमुखीस्तवः समाप्तः ॥

Encoded and proofread by Sridhar Seshagiri seshagir at engineering.sdsu.edu

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

Last updated ন্oday

http://sanskritdocuments.org

Varahamuki Stavam (Varahyanugraha Ashtakam) Lyrics in Devanagari PDF

% File name: varAhamukhIstava.itx

% Location : doc\ devii % Language: Sanskrit

% Subject: hinduism/religion

% Transliterated by: Sridhar Seshagiri sridhar.seshagiri at gmail.com % Proofread by: Sridhar Seshagiri sridhar.seshagiri at gmail.com

% Latest update: November 26, 2001

% Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

% Site access: http://sanskritdocuments.org

% This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study

% and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of

% any website or individuals or for commercial purpose without permission.

% Please help to maintain respect for volunteer spirit.

%

We acknowledge well-meaning volunteers for Sanskritdocuments.org and other sites to have built the collection of Sanskrit texts.

Please check their sites later for improved versions of the texts.

This file should strictly be kept for personal use.

| PDF file is generated [October 13, 2015] at <u>Stotram</u> Website |
|--|
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |
| |